# हाड़ौती अंचल के बाल साहित्यकारों का बाल साहित्य

# हाड़ौती की लेखिका श्यामा शर्मा की कृतियों में सामाजिक चेतना

– श्रीमती युगल सिंह, पी.एच.डी. शोधार्थी,
हिन्दी विभाग, केरियर पॉइन्ट विश्वविद्यालय,
कोटा (राज0)
मो.नं. 9983299686, 8209047043
E-Mail ID : singhyug143@gmail.com

– डॉ. गीता सक्सेना, शोध निदेशक
पूर्व प्राचार्य, स्वामी विवेकानन्द महाविद्यालय
कोटा (राजस्थान)

श्यामा शर्मा – जन्म स्थान करवाड़, जिला कोटा। बचपन में ही पिताजी स्वर्गवासी हो गए। नाना–मामा के यहाँ बड़ा ही अभावग्रस्त बचपन बीता। दसवीं क्लास में पढ़ते हुए ही जितेन्द्र निर्मोही जी से विवाह हो गया जो आज कोटा एवं राजस्थान ही नहीं अपितु राष्ट्रीय स्तर के प्रख्यात सम्मानीय कवि एवं लेखक हैं।

विवाह के बाद बच्चे जब छोटे ही थे तब स्नातक किया एवं बाद में लाइब्रेरियन का डिप्लोमा किया। हिन्दी विषय में एम.ए. प्रीवियस किया। तीनों बच्चों के विवाह एवं सर्विस की जिम्मेदारियों से निवृत होकर सृजन की ओर (2012 में) रूख किया। 2012 में श्यामा, जी की प्रथम कृति 'राजस्थानी की लोककथाएँ' (राजस्थानी लोक कथावाँ – हाड़ौती अंचल) प्रकाशित हुई।

रचनाकार पति जितेन्द्र निर्मोही जी की हौसला अफजाई से एवं मार्गदर्शन से लेखिका ने घर की चारदीवारी से बाहर निकलकर सृजन कार्य की शुरूआत की जो वास्तव में काबिले तारीफ है।

बुद्धिमान एवं बोल्ड सासू माँ की प्रेरणा से एवं गंभीर–धीर व्यक्तित्व के धनी पतिदेव के सहयोग से लेखिका की द्वितीय कृति 'हाड़ौती अंचल की रोचक लोककथाएँ' वर्ष 2018 में प्रकाशित हुई। दोनों कृतियों को अथाह प्रशंसा एवं प्रसिद्धि प्राप्त हुई। वस्तुतः लेखिका ने अपनी कृतियों से हाड़ौती अंचल की सांस्कृतिक विरासत को संजीवनी प्रदान करने का सराहनीय कार्य किया है। तत्पश्चात् 2020 में लेखिका, अपनी तृतीय कृति 'कोई गीत सुनाओ ना' को लेकर उपस्थित हुई है। उनकी यह कविताएँ बाल मन के अनुरूप है एवं परम्परागत एवं आधुनिक विषय बोध को समेटे हुए है। शब्द चयन भाषा, भाव, शैली, विषय वैविध्य, सरलता, सहजता एवं मनोरंजक शैली ने कृति को ओर अधिक रोचकता प्रदान की है। श्यामा शर्मा की बाल साहित्य

के क्षेत्र में प्रस्तुत कृतियाँ स्वागत योग्य है। जीवन में विषमताओं के पश्चात् भी लेखिका की कलम सतत लेखनरत है जो उनके दृढ़ विश्वास, अदम्य साहस एवं कुछ कर गुजरने की भावना को दर्शाता है।

**श्यामा शर्मा द्वारा रचित** 'राजस्थानी लोककथावां' सामाजिक सरोकार से परिपूर्ण कृति है लेखिका स्वयं हाड़ौती के रंग में रची बसी है और अपनी रचना से उन्होंने माटी से जुड़ाव का अनुभव कराया है साथ ही सामाजिक चेतना को बचाने का परिवर्धन करने का सफल प्रयास किया है। उन्होंने अपनी रचना से हमारी संस्कृति की जड़ों को सींचने का स्तुत्य कार्य किया है जो सामाजिकता के निर्वाह का एक अंग है और हमे जड़ों की ओर ले जाता है। माटी की सौंधी गंध उनकी रचना को पढ़ते हुए आत्मा की गहराई तक उतर जाती है। यही गंध उनकी कृति को विशेष बनाती है।

आज गिने–चुने लोग है जो इस तरह की लोककथाओं को पुनर्जीवित कर रहे है और अपनी लेखनी की तीखी धार से त्याग, बलिदान, साहस, वीरता के भावों से सम्पन्न सत्य पथगामी नागरिक बनने को प्रेरित करते है। ऐसी ही कथाओं के माध्यम से समाज को ईमानदारी और सच्चाई की सीख मिलती है। प्राचीन समय से लेकर आज तक यह लोककथाएँ मनोरंजन के साथ ज्ञानवर्धन भी करती आ रही है। यह चमत्कार और आश्चर्यजनक कल्पनाओं से भी भरपूर है साथ ही सत्य की जय–जय कार की सीख भी देती है एवं अन्याय का अन्त तथा न्याय की (राजस्थानी लोककथावां में) स्थापना भी करती है, जैसे की 'थप्पड़खोर' में सेठ जी का सातवां बेटा, कुछ भी न करते हुए भी किस्मत से राजा बन जाता है और अपनी सद्भावना से भाईयों और भाभीयों को पाँच–पाँच गांव जागीर में प्रदान करता है भाभियाँ जो काम न करने का ताना देती थी, देवर के पैरों में पड़ जाती है और अपनी गलती का अहसास करती है थप्पड़ खोर राजा अन्त में आदेश देता है– "याँ ई काई तोल छी क म्हूं यां को राजा बनूंगो, म्हारा दन फरबा सूं यां का दन भी फर जावेगा। कहानी का अन्त पाठकों को गद्गद् कर देता है।"

राजस्थानी लोककथावां की एक अन्य कथा 'लोढ़ी की सूज'–बूज' भी इसी प्रकार की कथा है, एक छोटी सी लोढ़ी (पत्थर) बड़ी रानी को पुनः अपना पद, गौरव, सम्मान, स्थान प्राप्त करने में सहायक बनती है। बच्चों को यह सब अद्भूत एवं आश्चर्य से भरपूर नज़र आता है अकाल्पनिक और अविश्वसनीय भी, मनोरंजक तो है ही साथ में समाज में सत्य की स्थापना की संदेश देती है। 'हाड़ौती अंचल की रोचक लोककथाएँ' (मार्च 2018) में प्रकाशित हुई है। यह लेखिका की द्वितीय कृति है इसमें कुल 13 कथाएँ है जिसमें बुरे कामों में परमात्मा से डरने की सद् प्रेरणा दी है अच्छे कार्यों में परमेश्वर सदैव साथ रहते है ये सभी जानते ही है लोक कथाएँ

समाज में नीति, धर्म, प्रेम का संचार करती आई है उसी प्रकार कौतूहल, शिक्षा, शौर्य, साहस, प्रेम की भी स्थापना करती आई है ये बात अलग है कि अब वो संस्कार नहीं रहे। यद्यपि चमत्मकार से परिपूर्ण ये कथाएँ आज भी उतनी ही प्रासंगिक है। विलुप्त होती इन कथाओं को सहेजना उतना ही आवश्यक है जितना समाज में सभी नैतिक मूल्यों की स्थापना। ये हमारी संस्कृति की अमूल्य धरोहर है। अपने भाग्य की खाने वाली राजकुमारी का साहस भी प्रशसंनीय है वह अपने साहस से ही अपने पति को नवजीवन प्रदान करती है, स्त्री क्या नहीं कर सकती है? इसी साहस की सत्यप्रेरणा देती है। इसी प्रकार 'थप्पड़खोर' सभी के थप्पड़ खाता है। फिर भी भगवान उसकी सुनता है। यह कथाएँ बच्चों को लुभाती है, गुदगुदाती है, समाज को सत्य और न्याय के मार्ग पर चलने को झक झरोती है ऐसा सुखद अन्त सुधीजन को आह्लादित कर देता है। "बड़ी रानी बोली– या म्हारी छोटी बहन जसी छै, ई म्हूं ही लाई छूं या म्हारे गोढे ई रहेगी।" इस प्रकार बड़ी रानी, छोटी रानी के अत्याचारों को भूलकर, क्षमाशीलता का सबूत देती है

पिता राजकुमारी से कहते है– मैं सच में अपने घमण्ड के कारण सही दिशा में नहीं था। तू जो कहती थी मैं आज मान गया कि सब अपना–अपना भाग्य लिखाकर आते है और अपने ही भाग्य का खाते है यह कह कर राजा की आँखे भर आई, वह खुशी के मारे अपनी पुत्री से लिपट गया।

कथा है 'दगा किसी सगा नही' इसमें सेठानी साधु के गाने से परेशान हो के कि दगा किसी का सगा नही, कोई करे, कोई कर देखो, करे और पे, पड़े आप पे, जिसका नतीजा यही देखो। सुनकर वह उसे चूहे मारने की दवा मिले हुए लड्डू पकड़ा देती है। दुर्भाग्य से लड्डू उसके पति व बच्चों के ही हाथ में आते है और वह उन्हें खा कर मर जाते है। साधु ने तो भला किया कि भूखों को लड्डू दिए पर सेठानी अपने किए की सजा भुगतती है और उसके पति एवं बच्चे मर जाते है तब उसे, अहसास होता हैं कि 'दगा किसी का सगा नही' और अपने किए पर पछताती है इससे यही सीख मिलती हैं कि यदि आप कुछ गलत करते है तो उसका परिणाम यही भुगतना पड़ता है।

प्रस्तुत कृति में संकलित सभी कथाएँ प्रायः ज्ञानवर्धक एवं नीति प्रधान है। समाज को संस्कारित करने में यह लोकथाएँ महत्वपूर्ण भूमिका निभाती चली आई है। सामाजिक जामरण एवं बालक को सामाजिक बुराई से बचाने में प्रस्तुत लोकथाएँ महती भूमिका निभाती है शीर्षक के साथ जुड़ा 'रोचक' शब्द इसे ओर महत्वपूर्ण बताता है यद्यपि कथाओं के पात्र अलौकिक कृत्य करते है, परन्तु फिर भी वो कथा की रोचकता को बनाये रखते है लेखिका की तृतीय कृति 'कोई गीत सुनाओं ना' में भी सामाजिक सरोकार से जुड़ी कविताएँ संकलित है– जिनमें

छुआछूत, सामाजिक अस्पृश्यता, निवारण हेतु लिखी गई प्रासंगिक कविता है– आओ हिलमिलकर सब गाये। छुआछूत का भूत भगाये, बापू का संदेश है प्यारा। धरती पर मानव है न्यारा, कौन है ऊँचा, कौन है नीचा। तरह–तरह का फूल बगीचा। समाज में समानता का संदेश देती है। इसी प्रकार 'नारी दिवस' नारी की महिमा को दर्शाती कविता है–

यहाँ वहाँ चहु ओर है न्यारी

नारी की महिमा है न्यारी

समाज में नारी का स्थान अन्यतम है, उन्हें अपना हक मिलना ही चाहिए। तभी वास्तविक रूप में नारी अपना समान अधिकार पा सकेगी। लेखिका की अन्य कविताएँ भी सामाजिक चेतना का प्रभावशाली, उदाहरण है उन्होंने समाज की ज्वलन्त समस्याओं पर कुशलता से बाल कविताऐं रची है समाज का एक अंग है परिवार और परिवार में सबसे प्रिय होती है नानी–बच्चों को नानी का घर विशेष रूप से लुभाता है।

नानी जल्दी आओ ना

मेरा मन बहलाओ ना

गाना गाओ लोरी गाओ

मुझको कोई कथा सुनाओ।

विख्यात साहित्यकार, धीर–गंभीर व्यक्तित्व के धनी, अनगिनत सम्मान और पुरस्कारों से पुरस्कृत अपने जीवन–साथी स्व नाम धन्य श्री जितेन्द्र निर्मोही द्वारा रचित बाल काव्य संग्रह– 'वन्य जीवां की पछाण' का लेखिका श्यामा जी ने राजस्थानी से हिन्दी भाषा में बहुत ही सुन्दर अनुवाद किया है कविताओं की चित्रात्मकता और गेयात्मकता बालकों को अवश्य ही प्रभावित करेगी। हाड़ौती लेखिकाओं में श्यामा शर्मा निर्विवाद अपना महत्वपूर्ण स्थान रखती है उनकी रचनाओं पर शोध कार्य करके मैं स्वयं को सौभाग्यशाली मानती हूँ।

## मुख्य ग्रन्थ

राजस्थानी साहित्य – "राजस्थानी लोककथावां" (हाड़ौती अंचल)

हिन्दी साहित्य – "हाड़ौती अंचल की रोचक लोककथाएँ"

"कोई गीत सुनाओ ना" (बाल काव्य)

अनुवाद – "वन्य जीवों की पहचान" (जितेन्द्र निर्मोही – बाल काव्य)

## सन्दर्भ ग्रन्थ सूची


| | | | |
|---|---|---|---|
| श्यामा शर्मा | राजस्थानी लोक कथावां | थप्पड़ खोर | पृष्ठ 32 |
| श्यामा शर्मा | राजस्थानी लोक कथावां | लोढ़ी की सूझबूझ | पृष्ठ 48 |
| श्यामा शर्मा | हाड़ौती अंचल की रोचक लोककथाएं | थप्पड़ खोर | पृष्ठ 28 |
| श्यामा शर्मा | हाड़ौती अंचल की रोचक लोककथाएं | दगा किसी का सगा नहीं | पृष्ठ 106 |
| श्यामा शर्मा | कोई गीत सुनाओ ना | कविता – छुआछूत | पृष्ठ 36 |
| श्यामा शर्मा | कोई गीत सुनाओ ना | नारी दिवस | पृष्ठ 23 |
| | | नानी | पृष्ठ 30 |

जितेन्द्र निर्मोही एवं सी.एल. सांखला – हाड़ौती अंचल का आधुनिक राजस्थानी काव्य, प्रकाशक – एम.बी. पब्लिशर्स, जयपुर 2016

जितेन्द्र निर्मोही – हाड़ौती अंचल को राजस्थानी राजस्थानी काव्य, बोधि प्रकाशन, 2012 जयपुर